॥ श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् ॥

श्लोक १

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरुपादुकाभ्यो
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः॥

सर्व गुरुओं को नमस्कार है। गुरुपादुकाओं को नमस्कार है।
श्रीगुरुदेव के गुरुओं अथवा परगुरुओं को और उनकी पादुकाओं को नमस्कार है।
आचार्यों और सिद्धविद्याओं के स्वामी सिद्धेश्वरों की पादुकाओं को नमस्कार है।

श्लोक २

ऐंकारह्रींकाररहस्ययुक्त-
श्रींकारगूढार्थमहाविभूत्या।
ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥

जो वाग्बीज ऐंकार और मायाबीज ह्रींकार के रहस्य से युक्त षोडशी बीज श्रींकार के
गूढ़ अर्थ के महान ऐश्वर्य से ॐकार के मर्मस्थान को प्रकट करने वाली हैं,
ऐसी उन गुरुपादुकाओं को नमस्कार है, नमस्कार है।

श्लोक ३

होत्राग्निहौत्राग्निहविष्यहोतृ-
होमादिसर्वाकृतिभासमानम्।
यद्ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥

होत्र और हौत्र इन दोनों प्रकार की अग्नियों में
हवन सामग्री, होम करने वाले होता और होम आदि

इन सब में भासने वाले एक ही परब्रह्म तत्त्व का साक्षात् अनुभव करा देने वाली
गुरुदेव की पादुकाओं को नमस्कार है, नमस्कार है।

श्लोक ४

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां
विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्याम्।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥

जो अन्तःकरण के काम-क्रोधादि महासर्पों के विष को उतारने वाली विषवैद्य हैं,
विवेक अर्थात् अन्तर-ज्ञान और वैराग्य की निधि को देने वाली हैं,
जो प्रत्यक्ष बोध-प्रदायिनी और शीघ्र मोक्ष देने वाली हैं,
श्रीगुरुदेव की ऐसी पादुकाओं को नमस्कार है, नमस्कार है।

श्लोक ५

अनन्तसंसारसमुद्रतार-
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्याम्।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां
नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥

अन्तहीन संसाररूपी सागर को पार करने के लिए जो नौकारूप हैं;
अविचल भक्ति को देने वाली हैं; प्रमाद, आलस्य, अज्ञानरूपी जड़ता के
समुद्र को सुखाने के लिए जो बड़वाग्नि [समुद्र में रहने वाली आग] के समान हैं;
श्रीगुरुदेव की उन पादुकाओं को नमस्कार है, नमस्कार है।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

© एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

इस स्तोत्र की रिकॉर्डिंग सिद्धयोग बुकस्टोर में उपलब्ध है।

***

श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्

कृष्ण हद्दाद द्वारा लिखित परिचय

सिद्धयोग पथ पर विद्यार्थी सद्गुरु का सम्मान व उनकी पूजा-अर्चना, भगवान की अनुग्राहिका शक्ति के रूप में व आध्यात्मिक श्रीगुरु के रूप में करते हैं; वे श्रीगुरु जो शिष्य को उसकी अपनी दिव्य आत्मा के प्रकाश को प्राप्त करने की अन्तर-यात्रा में उसका मार्गदर्शन करते हैं।

अनादिकाल से श्रीगुरु के चरणकमल व श्रीगुरु की पादुकाएँ इस दिव्य कृपाशक्ति के प्रतीक रहे हैं। भारत में, सन्त-महात्माओं के चरणकमलों व उनकी पादुकाओं को नमन करने की परम्परा है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि अन्तर-शक्ति सहस्त्रार से उनकी देह में से प्रवाहित होती हुई उनके चरणों से बाहर प्रवाहित होती है। इसलिए, श्रीगुरु की पादुकाओं का सम्मान करना, श्रीगुरु की पूजा करने और जिज्ञासुओं पर बरसाई गई उनकी दिव्य कृपाशक्ति की उपासना करने का एक पारम्परागत तरीक़ा है—इन पारम्परिक तरीक़ों का बहुत गहरा व महिमावान इतिहास है।

एक तरीक़ा जिसके माध्यम से सिद्धयोगी श्रीगुरु की पादुकाओं की पूजा-अर्चना करते हैं, वह है, श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् गाना जो श्रीगुरुकृपा के इस पावन स्वरूप का गुणगान करने हेतु संस्कृत भाषा में रचित एक स्तुति है।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द ने अनेक वर्षों में कई बार, सिद्धयोगियों को श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् गाने हेतु मार्गदर्शित किया है। इस स्तुति का मेरे लिए एक विशेष स्थान है क्योंकि वर्ष २००१ में युवाओं के लिए आयोजित प्रेमोत्सव संगीत रिट्रीट के हर दिन के आरम्भ में, सुबह गाने के लिए गुरुमाई जी ने इसी स्तुति का चयन किया था। इस रिट्रीट में, कई युवा संगीतकार—जिनमें मैं भी शामिल था—सिद्धयोग संगीत के अध्ययन व अभ्यास में निमग्न हो रहे थे। हमने सीखा कि सिद्धयोग संगीत का लक्ष्य है, परमानन्द, आत्मानन्द। हर दिन के आरम्भ में श्रीगुरुपादुकाओं की पूजा करना उन सिखावनियों की साक्षात् अभिव्यक्ति थी जिन्हें हम आत्मसात् कर रहे थे। श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् व श्रीगुरुपादुका पूजा, दोनों ही सतत मुझे उस रिट्रीट का एवं श्रीगुरु की कृपाशक्ति का स्मरण कराते हैं जो कि सिद्धयोग संगीत में सदैव विद्यमान है।

सन् १९७२ में जब बाबा मुक्तानन्द ने श्रीगुरुगीता पाठ को गुरुदेव सिद्धपीठ की दिनचर्या का एक भाग बनाया, तब से प्रातःकालीन स्वाध्याय का आरम्भ श्रीगुरुपादुकापञ्चकम् गाकर होता आया है। इस स्तुति के शब्द, आदि शंकराचार्य द्वारा रचित हैं जो अद्वैत वेदान्त के महान आचार्य हैं। इस स्तुति

में श्रीगुरुपादुकाओं का गुणगान किया गया है और यह समझाया गया है कि श्रीगुरु की पादुकाएँ "बोधप्रदायिनी" हैं अर्थात् "सत्य ज्ञान प्रदायिनी" हैं—वे आत्मा का ज्ञान प्रदान करती हैं।

मैं आपको आमन्त्रित करता हूँ कि यह रिकॉर्डिंग सुनते समय आप श्रीगुरुमाई के साथ इस पावन स्तुति को गाएँ। पूजा करते हुए, यह बोध बनाए रखें कि गुरुपादुकाएँ श्रीगुरु की जिस कृपाशक्ति की मूर्तरूप हैं, वही शक्ति आपके अन्तर में श्रीगुरु के साथ आपका शाश्वत सम्बन्ध बनकर स्थापित है।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।